30/ MMC

हिंदुस्तानी संगीत-पद्धति

क्रमिक पुस्तक-मालिका

पहली पुस्तक

[हिंदी-अनुवाद]

मूल ग्रंथकार

पं० विष्णुनारायण भातखंडे

संपादक

लक्ष्मीनारायण गर्ग



प्रकाशक

© संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

अप्रैल
१९७८

मूल्य
दो रुपए

Publication No. 75

Hindustani Sangeet Paddhati

KRAMIK PUSTAK MALIKA

Part I

Originally Written by

Pt. V. N. Bhatkhande

April, 1978

Price

Rs. 2/-

Published by

L. N. GARG

SANGEET KARYALAYA,

HATHRAS (INDIA)

Printed by

SANGEET PRESS,

HATHRAS (INDIA)

अनुक्रमणिका

Presented to
Sri Ramakrishna Ashram
Shivalaya, Srinagar
Kashmir

[signature]
18-7-78

प्रस्तावना

परार्धीनता की बेड़ियों में जकड़ी हुई भी हमारी रत्नगर्भा वसुन्धरा अपना स्नेहांचल फैलाए रही। उसी युग में, जबकि हमारा शास्त्रीय संगीत अंधकारमय पथ पर चलते-चलते लड़खड़ाने लगा था, भारतमाता ने अपनी उज्ज्वल कोख से एक आलोक-दूत 'रत्न-पुरुष' को जन्म दिया। यह रत्न-पुरुष थे—श्री विष्णुनारायण भातखंडे, बी० ए०, एल-एल० बी०, जिन्होंने आर्य-संस्कृति के प्रमुख स्तंभ भारतीय संगीत की विशृंखल निधियों को अपने व्यक्तित्व के प्रकाश में समेट लिया। राज्याश्रय-प्राप्त प्राचीन उस्तादों के पास आर्य-संगीत-प्रासाद के जो-कुछ भी भग्नावशेष थे, उन्हें एकत्रित करके नवीन हिंदुस्तानी संगीत-पद्धति के निर्माण का श्रेय आपको ही प्राप्त हुआ।

यों तो श्री भातखंडे ने जीवन-पर्यंत मराठी, अँग्रेजी तथा संस्कृत में संगीत के कई ग्रंथों का निर्माण किया और वे सभी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए, किंतु मराठी भाषा में लिखित 'हिंदुस्तानी संगीत-पद्धति क्रमिक पुस्तक-मालिका' (सीरीज) विशेष लोकप्रिय सिद्ध हुई।

इस सीरीज का प्रथम मराठी-संस्करण, आज से ३३ वर्ष पूर्व अर्थात् सन् १९२० ई० में प्रकाशित हुआ था। इधर बहुत समय से यह पुस्तक बाजार में नहीं मिल रही थी। इस कारण संगीत के विद्यार्थियों को जो असुविधा हो रही थी, उसे ध्यान में रखते हुए इसका हिंदी-अनुवाद पाठकों के सम्मुख उपस्थित किया जा रहा है। इस अनुवाद में श्री वामन नत्थोपंत भट्ट आदि संगीत-विद्वानों से जो सहयोग प्राप्त हुआ है, उसके लिए हम उनका आभार प्रदर्शित करते हैं और आशा करते हैं कि हिंदी-भाषाभाषी संगीत के विद्यार्थी इससे यथोचित लाभ उठाएँगे।

प्रथम संस्करण
दिसंबर, १९५३

शिक्षकों को सूचना

१. किसी भी स्वर को षड्ज (सा) मानकर विद्यार्थियों से उस स्वर में आवाज मिलाने का अभ्यास कराया जाए। शिक्षकों को चाहिए कि वे स्वयं षड्ज स्वर का स्पष्ट, गंभीर तथा मधुर आवाज के साथ उच्चारण करें और प्रतिदिन बार-बार विद्यार्थियों से उच्चारण कराएँ।
२. इस बात का ध्यान रखा जाए कि कोई भी विद्यार्थी शिक्षक के साथ-साथ न गाए। पहले स्वय शिक्षक गाएँ, तत्पश्चात् विद्यार्थी से उसी प्रकार गवाएँ।
३. कोई भी विद्यार्थी कंठ चुराकर अर्थात् दबी हुई आवाज से न गाए, इस बात का शिक्षक को ध्यान रखना आवश्यक है।
४. एकसाथ तीन से अधिक विद्यार्थियों को नहीं गवाना चाहिए।
५. स्वर-ज्ञान की शिक्षा देने के लिए आरंभ से ही श्यामपट्ट (ब्लेक-बोर्ड) का उपयोग करते हुए, उस पर लिखी हुई स्वर-पंक्तियाँ विद्यार्थियों से बुलवाई जाएँ।
६. विद्यार्थियों द्वारा बोले हुए स्वर-स्थान, श्वास-क्रिया (दम-साँस) तथा उनकी थकावट की ओर बराबर ध्यान रखना चाहिए।
७. सरगमों का पाठ आरंभ करने से पहले यह देख लेना आवश्यक है कि विद्यार्थियों को स्वर-ज्ञान उत्तम प्रकार से हुआ या नहीं। कारण, सरगम-ज्ञान होने से राग-ज्ञान होने लगता है, अतः स्वर-ज्ञान को सुदृढ़ बनाने की चेष्टा करनी चाहिए।
८. ताल तथा मात्राओं का ज्ञान, स्वर सिखाने से पहले ही करा देना चाहिए, क्योंकि सरगम सीखने से पहले विद्यार्थी को ताल-मात्रा का ज्ञान भली-भाँति होना आवश्यक है।
९. चीजों (गीतों) के बोल सिखाने से पहले, उन बोलों के ऊपर लिखी हुई स्वरों की पंक्तियाँ अलंकारों के साथ बोलने का अभ्यास करा देना चाहिए।
१०. शुद्ध स्वरों के पाठों के पढ़ने व बोलने का अभ्यास अच्छी तरह हो जाने के बाद ही विकृत स्वरों के अभ्यास की ओर बढ़ना चाहिए। विकृत स्वरों का स्थान प्रायः शुद्ध स्वरों से अर्द्धान्तर पर होता है, अतः उनको समझाते समय 'गम' तथा 'निसां', इन स्वरों का प्रमाण उपयोग में लाया करें, उदाहरणार्थ—'मप' इन स्वरों के बीच-बीच में 'निसां' कहलवाया करें। विकृत स्वर किस समय तथा किस प्रकार से सिखाए जाएँ, यह अध्यापक की सूझ-बूझ तथा योग्यता पर निर्भर है।

इस पुस्तक में दिए हुए चिह्नों का स्पष्टीकरण

रे, ग, ध, नि इन स्वरों के नीचे '–' ऐसी आड़ी रेखा लगी हो, तो इन स्वरों को कोमल स्वर मानना चाहिए, अन्यथा शुद्ध स्वर समझने चाहिए ।

म — इस प्रकार का मध्यम शुद्ध समझना चाहिए।

मं — इस प्रकार का तीव्र मध्यम जानना चाहिए ।

• — यह बिंदु जिन स्वरों के नीचे हो, वे स्वर मंद्र-सप्तक के हैं तथा जिन स्वरों के ऊपर हो, वे स्वर तार-सप्तक के हैं । बिना बिंदु के सब स्वर मध्य-सप्तक के समझने चाहिए ।

‿ — इस चिह्न में दिए हुए स्वर एक मात्रा-काल में गाए-बजाए जाएँगे ।

⁀ — ये चिह्न जिस स्वर से जिस स्वर तक हों, वहाँ मींड़ समझनी चाहिए ।

– — यह चिह्न जिस स्वर के आगे हो, उस स्वर को एक मात्रा बढ़ाकर बोलना चाहिए अथवा उतना समय विश्राम का समझना चाहिए ।

ऽ — गीत के बोलों में यह अवग्रह-चिह्न जिस अक्षर के आगे आए, उस अक्षर का उच्चार एक मात्रा-काल बढ़ाना चाहिए; जैसे—दा ऽ=दा आ ।

( ) जो स्वर इस प्रकार कोष्ठक में लिखा हो, उसका अगला स्वर, वह स्वर, उसका पहला स्वर और फिर वही स्वर, इस प्रकार चार स्वर एक मात्रा में गाए जाएँगे; जैसे—(प)=धपमप, (म)=पमगम, (सा)=रेसानि़सा ।

कहीं-कहीं स्वरों के ऊपर छोटे टाइप में स्वर दिए हैं, उन्हें कण-स्वर (ग्रेस-नोट) कहते हैं । ये सूक्ष्म कण नवीन विद्यार्थियों द्वारा गले से न निकल सकें, तो भी इनके अभाव में राग-हानि होने का भय नहीं है । किंतु इनके उपयोग से गायन अधिक रंजक हो जाता है ।

× — गायन में यह चिह्न ताल की 'सम' दिखाता है । 'सम' को प्रथम ताली मानकर शेष तालियाँ उसी आधार पर माननी चाहिए ।

* — यह चिह्न ताल की 'खाली' जगह को बताता है ।

इस पुस्तक में आई हुई तालों का स्पष्टीकरण

दादरा ताल-(६ मात्राएँ)

मात्रा-	१	२	३	४	५	६
	×			०		

झप ताल-(१० मात्राएं)

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
	×		२			०		३		

एकताल-(१२ मात्राएं)

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
	×		०		२		०		३		४	

त्रिताल-(१६ मात्राएं)

मात्रा-	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
	×				२				०				३			

क्रमिक

पहली पुस्तक

मंगलाचरण

सपार्वतीकं विश्वेशं सलक्ष्मीकं च केशवम् ।
प्रणतोऽस्मि सदा कुर्यात् तदंघ्रियुगलं शिवम् ॥

प्रथम भाग

स्वर-बोध

पाठ १.

सूचना : अध्यापकों को चाहिए कि वे अपने शिष्यों को सिखाते समय पृथक्-पृथक् ध्वनियों को षड्ज (सा) मानकर, उसमें विद्यार्थियों की आवाज मिलवाकर गवाएँ । प्रत्येक बार उस ध्वनि को 'सा' मानकर उसका उच्चारण कराएँ ।

सा.
सा, रे सा.
सा, रे, ग, रे, सा.
सा, रे, ग, म, ग, रे, सा.
म.
म, ग, म.
म, ग, रे, ग, म.
म, ग, रे, सा, रे, ग, म.

सा.	म.
सा रे सा.	म ग म.
रे ग रे.	ग रे ग.
ग म ग.	रे सा रे.

पाठ २.

सा, रे, ग, म.

सा, रे ग म.

सा रे, ग म.

सा रे ग, म.

सा रे ग म.

सा, रे, ग, म.

×, रे, ग, म.

सा, ×, ग, म.

सा, रे, ×, म.

सा, रे, ग, ×.

म, ग, रे, सा.

म, ग रे सा.

म ग, रे सा.

म ग रे, सा.

म ग रे सा.

म, ग, रे, सा.

×, ग, रे, सा.

म, ×, रे, सा.

म, ग, ×, सा.

म, ग, रे, ×.

पाठ ३.

प.

प, ध, प.

प, ध, नि, ध, प.

प, ध, नि, सां, नि, ध, प.

सां.

सां, नि, सां.

सां, नि, ध, नि, सां.

सां, नि, ध, प, ध, नि, सां.

प.

प, ध, प.

ध, नि, ध.

नि, सां, नि.

सां.

सां, नि, सां.

नि, ध, नि

ध, प, ध.

पाठ ४.

प, ध, नि, सां.	सां, नि, ध, प.
प, ध नि सां.	सां, नि ध प.
प ध, नि सां.	सां नि, ध प.
प ध नि, सां.	सां नि ध, प.
प ध नि सां.	सां नि ध प.
प, ध, नि, सां.	सां, नि, ध, प.
×, ध, नि, सां.	×, नि, ध, प.
प, ×, नि, सां.	सां, ×, ध, प.
प, ध, ×, सां.	सां, नि, ×, प.
प, ध, नि, ×.	सां नि, ध, ×.

सूचना : उपर्युक्त चारों पाठ विद्यार्थियों द्वारा उलट-पलटकर उत्तम रीति से पढ़वाए जाएँ तथा शिक्षक द्वारा इन पाठों को छोटे-बड़े स्वर-समूहों में, नए-नए ढंगों से बनाकर श्यामपट्ट पर लिखकर विद्यार्थियों से नित्य-प्रति पढ़वाया जाए। इन स्वर-समुदायों के स्वर क्रमशः अर्थात् सिलसिलेवार होने चाहिए; किंतु आगे चलकर भी ये स्वर क्रमानुसार ही रहें, यह आवश्यक नहीं। शुद्ध स्वरों का ज्ञान पक्का हो जाने के पश्चात् फिर एक-एक, दो-दो विकृत स्वर इन्हीं पाठों में शामिल करके अभ्यास करना चाहिए। स्वर-स्थानों की ओर जितना ध्यान दिया जाएगा, उतनी ही अधिक सफलता मिलेगी और स्वर-ज्ञान पक्का होगा।

पाठ ५.

सूचना : इस पाठ में दिए हुए पलटे अथवा अलंकार विद्यार्थियों से जुबानी याद करवालें, तो विद्यार्थियों के हित में बहुत ही अच्छा होगा। इन अलंकारों को आरोह में कहने का अभ्यास उत्तम रीति से होने के पश्चात् अवरोह में भी इसी प्रकार से अभ्यास कराएँ; उदाहरणार्थ—अलंकार एक व दो देखिए। ये दोनों प्रकार याद होने के बाद उन्हीं स्वरों को भिन्न-भिन्न अकार-इकार आदि में बुलवाया जाए एवं लय के विभिन्न प्रकारों में बार-बार गाकर विद्यार्थियों को बताया जाए। शुद्ध स्वरों की साधना पूर्ण होने के पश्चात् फिर यही क्रम विकृत स्वरों के अभ्यास की ओर बढ़ाना चाहिए।

१. सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां ।
सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा ।
२. सासा, रेरे, गग, मम, पप, धध, निनि, सांसां ।
सांसां, निनि, धध, पप, मम, गग, रेरे, सासा ।
३. सासासा, रेरेरे, गगग, ममम, पपप,
धधध, निनिनि, सांसांसां ।
४. सारे, रेग, गम, पध, धनि, निसां ।
५. सारेसा, रेगरे, गमग, मपम, पधप,
धनिध, निसांनि, सांरेंसां ।
६. सासा रेरे सासा, रेरे गग रेरे, गग मम गग,
मम पप मम, पप धध पप, धध निनि धध,
निनि सांसां निनि, सांसां रेंरें सांसां ।
७. सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसां ।
८. सारेगम, रेगमप, गमपध, मपधनि, पधनिसां ।
९. साग, रेम, गप, मध, पनि, धसां ।
१०. सा सा ग ग, रे रे म म, ग ग प प, म म ध ध,
प प नि नि, ध ध सां सां ।

पाठ. ६

११. सा, म, रे प, ग ध, म नि, प सां ।
१२. सासामम, रेरेपप, गगधध, ममनिनि, पपसांसां ।
१३. सा प, रे ध, ग नि, म सां ।
१४. सा सा प प, रे रे ध ध, ग ग नि नि, म म सां सां ।
१५. सां सां नि ध, नि नि ध प, ध ध प म, प प म ग,
म म ग रे, ग ग रे सा ।

१६. सा रे ग ग ग, रे ग म म म, ग म प प प, म प ध ध ध, प ध नि नि नि, ध नि सां सां सां ।

१७. सा रे सा रे ग, रे ग रे ग म, ग म ग म प, म प म प ध, प ध प ध नि, ध नि ध नि सां ।

१८. सा रे ग सा रे ग म, रे ग म रे ग म प, ग म प ग म प ध, म प ध म प ध नि, प ध नि प ध नि सां ।

१९. सा रे ग म प ध नि सां नि ध प म ग रे सा.
सा रे ग म प ध नि ध प म ग सा.
सा रे ग म प ध प म ग रे सा.
सा रे ग म प म ग रे सा.
सा रे ग म ग रे सा.
सा रे ग रे सा.
सा रे सा.

२०. सा रे सा, सा रे ग रे सा, सा रे ग म ग रे सा, सा रे ग म प म ग रे सा, सा रे ग म प ध प म ग रे सा, सा रे ग म प ध नि ध प म ग रे सा, सा रे ग म प ध नि सां नि ध प म ग रे सा ।

पाठ ७.

शुद्ध व विकृत स्वरों का अभ्यास करने के लिए उदाहरण

शिक्षकों को सूचना : इस स्वर-माला में प्रत्येक स्वर एक मात्रा-काल में कहलाता है। जहाँ जिस स्वर को जितनी मात्रा बढ़ाकर गवाना है, वहाँ उस स्वर के आगे 'ऽ' ऐसे अवग्रह-चिह्न अंकित किए गए हैं। इस उदाहरण में आए हुए स्वर-विस्तार बड़ी सावधानी से तथा मधुर

आवाज से गवाने चाहिए। पढ़ने की सुविधा के लिए प्रत्येक चार-चार मात्राओं के आगे '।' ऐसी खड़ी रेखा दे दी गई है।

प्रकार. १

(अ) शुद्ध स्वर

१. सा ऽ ग ऽ । रे ऽ सा ऽ । सा ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ ।
ग ऽ म ऽ । ग ऽ ऽ ऽ । म ऽ प ऽ । म ऽ ग ऽ ।
म ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ ।

२. सा ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ । ग ऽ म ऽ । रे ऽ सा ऽ ।
ग ऽ म ऽ । ध ऽ प ऽ । ध ऽ म ऽ । ग ऽ म ऽ ।
रे ऽ ऽ ऽ । सा ऽ ऽ ऽ ।

३. सा ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ । ग ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ ।
रे ऽ सा ऽ । नि़ ऽ ध़ ऽ । नि़ ऽ ध़ ऽ । प़ ऽ ऽ ऽ ।
प़ ऽ नि़ ऽ । ध़ ऽ नि़ ऽ । सा ऽ ऽ ऽ । रे ऽ सा ऽ ।
ग ऽ म ऽ । ध ऽ प ऽ । म ऽ ग ऽ । म ऽ रे ऽ ।
ग ऽ म ऽ । प ऽ म ऽ । ग ऽ म ऽ । रे ऽ सा ऽ ।

४. सा रे सा ऽ । सा रे ग म । रे रे सा ऽ । सा रे ग म ।
प म ग म । रे रे सा ऽ । सा रे ग म । ध प ध म ।
ग ऽ प म । ग म रे सा । सा रे ग म । ध ध नि ध ।
प ध म ग । म ग रे सा । सा रे ग म । प ध नि सां ।
सां नि ध प । म ग रे सा ।

५. सा रे ग म । रे ग म प । प म ध प । नि ध नि सां ।
गं रें सां नि । ध नि ध प । ध म ग प । म ग रे सा ।

६. सा सा ग म । रे ऽ ग प । नि ध ऽ नि । सां ऽ रें सां ।
सां रें गं रें । सां ऽ रें सां । ऽ नि ध प । म ग रे सा ।
७. प प ध नि । सां ऽ रें सां । सां रें गं मं । रें रें सां ऽ ।
सां रें गं मं । पं गं मं रें । सां रें सां ऽ । ध नि सां ऽ ।
गं रें सां नि । ध प सां नि । ध प म ग । म ग रे सा ।

(ब) मे विकृत

१. ग ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ । नि़ ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ ।
नि़ ऽ रे ऽ । ग ऽ ऽ ऽ । रे ऽ ग ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ।
प ऽ मे ऽ । ग ऽ ऽ ऽ । रे ऽ ग ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ।
प ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ । नि़ ऽ रे ऽ । सा ऽ ऽ ऽ ।
२. सा ऽ रे ऽ । ग ऽ ऽ ऽ । रे ऽ ग ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ।
प ऽ मे ऽ । ग ऽ ऽ ऽ । ध ऽ प ऽ । मे ऽ ग ऽ ।
नि ऽ ध ऽ । प ऽ मे ऽ । ध ऽ प ऽ । मे ऽ ग ऽ ।
रे ऽ ग ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ । प ऽ रे ऽ । नि़ रे सा ऽ ।
३. सा ऽ नि़ ऽ । ध़ ऽ प़ ऽ । नि़ ऽ ध़ ऽ । प़ ऽ ध़ प़ ।
ध़ ऽ नि़ ऽ । रे ऽ ऽ ऽ । ग ऽ रे ऽ । प ऽ मे ऽ ।
ग ऽ रे ऽ । नि ध प मे । ग ऽ रे ऽ । ग ऽ रे ऽ ।
नि़ रे सा ऽ ।
४. सा रे ग मे । प ग मे प । नि ऽ ध ऽ । प ऽ ध प ।
सां ऽ नि ऽ । ध ऽ प ऽ । मे प नि ध । प ध प मे ।
ग ऽ प मे । ग ऽ रे ऽ । प ऽ रे ऽ । नि़ रे सा ऽ ।
५. सा रे सा ऽ । सा रे ग रे । सा रे सा ऽ । सा रे ग मे ।
प रे ऽ सा । सा रे ग मे । प ध प मे । ग रे प मे ।
ग रे सा ऽ । सा रे ग मे । प ध नि ध । प मे ग प ।
ग रे सा ऽ । सा रे ग मे । प ध नि सां । नि ध प मे ।
ग रे सा ऽ ।

६. ग ग ग प ध। प सां ऽ सां। नि रें सां ऽ। नि रें गं रें।
सां रें सां ऽ। नि रें गं मं। पं रें ऽ सां। गं रें सां ऽ।
रें सां ऽ नि। ध प नि ध। प मं ग रे। ग मं प मं।
ग रे प मं। ग रे प ऽ। रे ऽ सा ऽ।

(सा) नि॒, विकृत (अवरोह में)

१. नि़ सा ग म। प ग ऽ म। नि॒ ध म प। ध म ग ऽ
ध नि सां ऽ। सां नि॒ ध प। म ग रे सा।

२. नि़ सा ग ऽ। म प ग म। नि॒ ध ऽ म। प ध ऽ म।
ग ऽ सां ऽ। नि॒ ध ऽ म। प ध म ग। प ऽ ग म।
ग रे सा ऽ।

३. नि़ सा ग ऽ। म ग रे सा। प ग ऽ म। ग रे सा ऽ।
नि॒ ध सां नि॒। ध म प ध। ऽ म ग ऽ। प ऽ ग ऽ।
म ग रे सा।

४. नि़ सा ग म। ग रे सा ऽ। प ग म प। म ग रे सा।
सां रें सां नि॒। ध सां नि॒ ध। ग म नि॒ ध। सां ऽ नि॒ ध।
म प ध म। ग ऽ ऽ ऽ। प ऽ ग म। ग रे सा ऽ।

५. ग म ध ऽ। म ध नि॒ ध। सां ऽ नि॒ ध। रें सां नि॒ ध।
गं मं गं रें। सां ऽ नि॒ ध। म ध नि सां। नि॒ ध सां नि॒।
ध ऽ म प। ध ऽ म ग। प ऽ ग म। ग रे सा ऽ।

६. ग म ध नि। सां ऽ नि सां। नि नि सां ऽ। रें सां नि॒ ध।
गं मं पं गं। मं गं रें सां। नि सां रें सां। नि सां नि॒ ध।
सां ऽ नि॒ ध। ऽ म ग ऽ। प ऽ ग म। ग रे सा ऽ।

पाठ ८.

शुद्ध व विकृत स्वरों का अभ्यास करने के लिए उदाहरण

प्रकार २.

(अ) रे, ध, विकृत

१. ग ऽ म प । ध ऽ प ऽ । म ऽ ग ऽ । रे ऽ ऽ ऽ ।
ग ऽ म ऽ । प ऽ म ऽ । ग ऽ रे ऽ । रे ऽ सा ऽ ।
ग ऽ म प । ध ऽ प ऽ ।

२. सा ऽ रे ऽ । सा ऽ नि़ सा । ध़ ऽ ऽ नि़ । ध़ ऽ प़ ऽ ।
म़ प़ ध़ ऽ । नि़ ऽ सा ऽ । ग ऽ रे ऽ । ग म प म ।
ग ऽ रे ऽ । रे ऽ सा ऽ । ग ऽ म प । ध ऽ प ऽ ।

३. सा ऽ रे सा । ग म रे सा । ग म ध प । म ग रे सा ।
नि़ सा ग म । ध ऽ प ऽ । म ग रे प । म ग रे सा ।
ग ऽ म प । ध ऽ प ऽ ।

४. ग ऽ म प । रे ग म प । ग म ध प । नि ध ऽ प ।
सां ऽ ध ऽ । नि ध ऽ प । म प म ग । रे ग म प ।
म ग रे सा । ग ऽ म प । ध ऽ प ऽ ।

५. प प ध ऽ । नि ऽ सां ऽ । ध ऽ नि सां । रें ऽ सां ऽ ।
गं मं पं गं । मं गं रें सां । सां रें सां नि । ध ऽ सां नि ।
ध ऽ म प । म ग रे सा । ग ऽ म प । ध ऽ प ऽ ।

(ब) रे, मे, ध विकृत

१. ग ऽ ऽ ऽ । रे ऽ सा ऽ । नि़ ऽ सा रे । ग ऽ ऽ ऽ ।
मे ऽ ग ऽ । प ऽ मे ऽ । ग ऽ मे ग । रे ग ऽ ऽ ।
मे ग रे सा । नि़ ऽ सा रे । ग ऽ ऽ ऽ ।

२. नि़ नि़ सा रे। ग ऽ रे ग। ऽ मं ग ऽ। प मं ग ऽ।
प ध मं प। ग मं ग ऽ। रे ग ऽ मं। ग ऽ रे सा।
नि़ ऽ सा रे। ग ऽ ऽ ऽ।

३. नि़ ऽ रे नि़। ध़ नि़ ध़ प़। म़ ध़ नि़ ऽ। ध़ नि़ सा ऽ।
नि़ रे ग ऽ। मं ग रे सा। नि़ रे ग ऽ। मं ग ऽ ऽ।
प ध मं प। ग मं ग ऽ। रें नि ध नि। ध प ध प।
मं प मं ग। मं रे ग ऽ। नि़ रे ग ऽ। मं ग ध मं।
ग ऽ मं ग। रे ग रे सा। नि़ नि़ सा रे। ग ऽ ऽ ऽ।

४. नि़ रे ग रे। ग मं प मं। ग ऽ मं ग। ऽ रे ग ऽ।
नि ध मं ग। मं ग रे सा। नि़ ऽ सा रे। ग ऽ ऽ ऽ।

५. नि़ रे सा ऽ। नि़ रे ग रे। सा ऽ नि़ रे। ग मं ग रे।
सा ऽ नि़ रे। ग मं ध मं। ग रे सा ऽ। नि़ रे ग मं।
ध नि ध प। मं ग ध मं। ग रे सा ऽ। नि़ रे ग मं।
ध नि रें नि। ध प मं ग। मं ग रे सा। नि़ रे ग मं।
ध नि सां ऽ। सां नि ध प। मं ग रे सा।

६. मं ग मं ध। मं सां ऽ सां। नि रें सां ऽ। गं रें सां ऽ।
नि रें गं मंं। गं रें सां ऽ। गं रें सां रें। नि ध सां नि।
ध नि ध प। मं ग मं ग। नि़ नि़ सा रे। ग ऽ मं ग।
ध मं ग मं। ग रे सा ऽ। नि़ ऽ सा रे। ग ऽ ऽ ऽ।

(क) रे, मं विकृत

१. ग ऽ रे सा। नि़ रे सा ऽ। नि़ रे ग ऽ। रे ऽ ग ऽ।
मं ग रे ऽ। ग रे ऽ सा। मं ध मं ग। रे ग रे सा।

२. नि़ रे॒ ग ऽ । रे॒ ग ऽ ऽ । म॑ ग रे॒ ध । म॑ ग रे॒ सा ।
नि ध म॑ ग । म॑ ग रे॒ सा । सा रे॒ सा ग । रे॒ म॑ ग रे॒ ।
नि नि ध म॑ । ग रे॒ सा ऽ ।

३. नि़ रे॒ नि़ ध़ । म़॑ ध़ सा ऽ । रे॒ ऽ ग रे॒ । म॑ ग रे॒ ध ।
म॑ ग रे॒ म॑ । ग रे॒ सा ऽ । सां रें॒ नि ध । म॑ ग रे॒ सा ।

४. नि़ रे॒ सा ऽ । नि़ रे॒ ग रे॒ । सा ऽ नि़ रे॒ । ग म॑ ग रे॒ ।
सा ऽ नि़ रे॒ । ग म॑ ध म॑ । ग रे॒ सा ऽ । नि़ रे॒ ग म॑ ।
ध नि ध म॑ । ध म॑ ग रे॒ । ग रे॒ सा ऽ । नि़ रे॒ ग म॑ ।
ध नि रें॒ नि । ध म॑ ग रे॒ । ग रे॒ सा ऽ ।

५. म॑ ग म॑ ध । म॑ सां ऽ सां । नि नि रें॒ रें॒ । नि रें॒ नि ध ।
रें॒ नि ध नि । ध म॑ ध म॑ । ग रे॒ ग म॑ । ग रे॒ सा ऽ ।

पाठ ९.

शुद्ध व विकृत स्वरों का अभ्यास करने के लिए उदाहरण

प्रकार ३.

(अ) ग॒, नि॒, विकृत

१. नि॒ सा रे रे । ग॒ ग॒ म म । प ऽ ऽ ऽ । म प ध म ।
प ग॒ ऽ रे । रे ग॒ रे म । ग॒ रे नि॒ सा । नि॒ ध म प ।
ध म ग॒ रे ।

२. नि॒ सा ग॒ रे । रे म ग॒ रे । रे म प ध । म प ग॒ रे ।
रे म प ध । नि॒ ध सां नि॒ । ध म प ध । म प ग॒ रे ।
रे ग॒ रे म । ग॒ रे नि॒ सा । नि॒ सा रे रे । ग॒ ग॒ म मा ।
प ऽ ऽ ऽ ।

३. रे ग॒ रे म । ग॒ रे नि॒ सा । रे म प ध । म प ग॒ रे ।
सां रें सां नि॒ । ध म सां नि॒ । ध नि॒ ध प । ध म ग॒ रे ।
रे ग॒ रे म । ग॒ रे नि॒ सा । रें नि॒ ध प । ध म ग॒ रे ।

४. नि॒ सा ध॒ नि॒ । सां ऽ ग॒ रे । रे ग॒ म ग॒ । रे प ग॒ रे ।
रें नि॒ सां नि॒ । ध म सां नि॒ । ध म प ध । म प ग॒ रे ।
रे पं म प । ग॒ ग॒ रे सा । नि॒ सा रे रे । ग॒ ग॒ सा रे ।
प ऽ ऽ ऽ ।

५. ध म प धं । नि॒ नि॒ सां ऽ । नि॒ नि॒ सां ऽ । नि॒ सां नि॒ ध ।
रें नि॒ सां रें । नि॒ सां नि॒ ध । सां नि॒ ध म । प ध ग॒ रे ।
रे ग॒ रे म । ग॒ रे नि॒ सा । रे म प सां । नि॒ ध ग॒ रे ।
रे पं म प । ग॒ ग॒ रे सा । नि॒ सा रे रे । ग॒ ग॒ सा रे ।
प ऽ ऽ ऽ ।

(ब) ग॒, ध॒, नि॒ विकृत

१. ऽ म प प । ध॒ ऽ ऽ प । नि॒ ध॒ ऽ प । ध॒ म प ध॒ ।
ग॒ ऽ रे सा । रे म प ऽ । नि॒ ध॒ ऽ प ।

२. रे रे सा ऽ । ग॒ रे सा ऽ । रे म प ध॒ । ग॒ ऽ रे सा ।
रे म प ऽ । नि॒ ध॒ ऽ प । सां नि॒ ध॒ प । ध॒ म प ध॒ ।
ग॒ ऽ रे सा । रे मं प प । नि॒ ध॒ ऽ प ।

३. रे सा नि॒ ध॒ । प॒ नि॒ ध॒ प॒ । ग॒ प॒ ध॒ ध॒ । सा ऽ रे सा ।
रे म प ध॒ । ग॒ ऽ रे सा । रे म प प । नि॒ ध॒ ऽ प ।

४. सा ग रे सा । म ग रे सा । रे म प ध । ग ग रे सा ।
रे म प प । नि ध ऽ प । सां नि ध प । रें सां नि ध ।
नि ध प प । म प सां ऽ । नि ध प प । ध म प ध ।
ग ग रे सा । रे म प प । नि ध ऽ प ।

५. म प ध ध । सां ऽ ऽ सां । ध ध सां ऽ । रें सां ध प ।
प गं रें सां । रें सां ध प । सां ऽ ध प । रें सां ध प ।
म प नि ध । प ग रे सा । रे म प प । नि ध ऽ प ।

(सा) रे, ग, ध, नि विकृत

१. सा रे ग म । ग रे सा ऽ । ध़ नि़ सा ऽ । रे नि़ सा ऽ ।
प ध म प । ग ऽ रे सा ।

२. सा ऽ रे म । ग रे सा ऽ । ध़ नि़ ध़ प़ । ध़ नि़ सा ऽ ।
सा ध प ध । म प ग नि । ध प ग म । ग रे सा ऽ ।

३. नि़ सा ग म । ध ऽ प ऽ । ध प ध नि । ध प ग ऽ ।
ग नि ध नि । ध प ग म । सां नि ध प । म ग रे सा ।

४. सा रे सा ऽ । सा रे ग रे । सा ऽ सा रे । ग म ग रे ।
सा ऽ सा रे । ग म प म । ग रे सा ऽ । सा रें ग म ।
प ध प म । ग रे सा ऽ । सा रे ग म । प ध नि ध ।
प म ग म । ग रे सा ऽ । मा रे ग म । प ध नि सां ।
नि ध प म । ग रे सा ऽ ।

५. ध म ध नि । सां ऽ रें सां । नि नि सां ऽ । रें सां ध प ।
सा ध प नि । म प ग म । नि ध प म । ग रे सा ऽ ।

(ख) रे, ग, म॑, ध विकृत

१. नि ऽ सा रे । ग ऽ ऽ ऽ । रे ऽ ग ऽ । रे ऽ सा ऽ ।
नि ऽ सा ऽ । रे नि ध ऽ । म ऽ ध ऽ । नि ऽ सा ऽ ।
रे ऽ ग ऽ । रे ऽ सा ऽ ।

२. नि ऽ सा रे । ग ऽ ऽ ऽ । म॑ ऽ ग ऽ । ग म॑ ग ऽ ।
म॑ ध नि ध । म॑ ग ध म॑ । ग ऽ रे ग । ऽ रे सा ऽ ।

३. नि ऽ सा ऽ । रे नि ध प । म प ध नि । सा ऽ रे सा ।
रे ग ऽ ऽ । ध म॑ ग ऽ । नि ध म॑ ग । रे ग रे सा ।

४. ध नि सा रे । ग ऽ रे ग । म॑ ग ध म॑ । ग ऽ रे ग ।
ध प नि ध । प ध म॑ प । म॑ ग ध म॑ । ग ऽ रे सा ।

५. नि सा रे सा । रे ग रे सा । म॑ ग ध म॑ । ग ऽ रे सा ।
नि रें नि ध । नि ध प ध । प म॑ ग ऽ । रे ग रे सा ।

६. म॑ ग म॑ ध । नि ऽ सां ऽ । रें रें गं गं । रें रें सां ऽ ।
गं रें सां रें । नि ध सां नि । ध नि ध प । म॑ ग रे सा ।
नि नि सा रे । ग ऽ ऽ ऽ ।

पाठ १०.

स्वरकाल-साधन

शिक्षकों को सूचना : इस पाठ में १ अंक को 'एक मात्रा' में कायम करके मात्रा-काल का नियम बनाना चाहिए। फिर इसी नियम के अनुसार आगे दिए हुए स्वर-प्रकार विद्यार्थियों से गवाए जाएँ। १ अंक के अंतर्गत जितने स्वर लिखे हैं, वे सभी स्वर एक मात्रा-काल में गवाए जाएँ। एक मात्रा-काल में जितने भी स्वर या अवग्रह लिखे हैं, उनके नीचे ‿ ऐसे अथवा ⎵ ऐसा कोष्ठक-चिह्न दिया गया है। जहाँ एक मात्रा-काल में अधिक स्वर लिखे हैं, वहाँ लय को घटाकर (विलंबित करके) गाने में विद्यार्थियों को सुविधा रहेगी।

	१	१	१	१	१	१	१	१	
१.	सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां	। इसी प्रकार अवरोह करो।

२. सारे गम पध निसां। इसी प्रकार अवरोह करो।

३. सारेगम पधनिसां। "

४. सारेगमपधनिसां। "

५. सासा रेरे गग मम पप धध निनि सांसां। "

६. सासासा रेरेरे गगग ममम पपप धधध निनिनि सांसांसां। "

७. सारेग रेगम गमप मपध पधनि धनिसां। "

८. साऽऽरे गऽऽऽ रेऽऽग मऽऽऽ गऽऽम पऽऽऽ मऽऽप धऽऽऽ पऽऽध निऽऽऽ धऽऽनि सांऽऽऽ।

९. साऽगरे गऽऽऽ रेऽमग मऽऽऽ गऽपम पऽऽऽ मऽधप धऽऽऽ पऽनिध निऽऽऽ धऽसांनि सांऽऽऽ। "

१०. ऽऽसाऽ ऽऽरेऽ ऽऽगऽ ऽऽमऽ ऽऽपऽ ऽऽधऽ ऽऽनिऽ ऽऽसांऽ। "

इसी प्रकार मात्राओं को भिन्न-भिन्न प्रकारों से तैयार करके शिक्षकों द्वारा उनमें योग्य स्वर लिखकर कक्षा में ही विद्यार्थियों से पढ़वाया या गवाया जाए। इसके उपरांत आगे दिए हुए अलंकारिक प्रकारों को भी विद्यार्थियों से पढ़वाने का क्रम चालू करें तथा स्वयं गाकर उन्हें बताएँ। इन प्रकारों में भी एक मात्रा-काल अवग्रह चिह्न द्वारा दिखाया गया है।

नि॒ सा | ग ग ग | मं प सां | प ग
सा – रे सा | मग प रे सा | प सां ध प | ग (प) रे सा
ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

प | | प
सां ध प ग | रेग सारेग ,–प ग | ग,पध सां सांसांधप गरेसा-
ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽऽ ऽऽऽ ,ऽऽ ऽ | ऽ,ऽऽ ऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ।

म | म रे म | नि॒ सा
रे म प मप | नि॒नि॒पमप रे प रे | सा (सा) नि॒ प
ऽ ऽ ऽ ऽऽ | ऽऽऽऽऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

नि | | ग
ध॒ – प –,मप | ध॒ध॒पम प म ग॒ | म (म) रे॒ सा
ऽ ऽ ऽ ऽ,ऽऽ | ऽऽऽऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ ।

मं प मं | रे॒ सा ग॒ | ग॒ ग॒ मं
–,प ग॒ ग॒मंप ग॒ ,रे॒रे॒ सा | नि॒ सा मंग॒ प | ध॒ध॒पमंप मंग॒ प ग॒ रे॒ सा
ऽ,ऽ ऽ ऽऽऽ ऽ ,ऽऽ ऽ | ऽ ऽ ऽऽ ऽ | ऽऽऽऽ ऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

सा | नि नि॒नि॒ | ध॒ | ध ध मं
मे | ग (सा) ध॒नि॒ रे॒रे॒, नि॒ | मं॒ ध॒ रे॒ सा | मंध सांसांनिधनि मं धग
ऽ | ऽ ऽ ऽऽ ऽऽ, ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽऽ ऽऽऽऽऽ ऽ ऽऽ

नि॒
मंमंगरे॒ सानि॒सा- ध॒, नि॒रे॒
ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽ, ऽऽ

ज्ञातव्य : उपर्युक्त प्रकारों को गाते समय सुविधा के लिए अकार 'ऽ' के स्थान पर आ, ता, ना न आदि अक्षरों का प्रयोग कर सकते हैं।

दूसरा भाग

राग-बोध

ठाठ कल्याण

स्वर

सा रे ग म प ध नि सां.

राग यमन–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

वादी स्वर : ग, संवादी : नि
विकृत स्वर : म तीव्र
गायन-समय : रात्रि का प्रथम प्रहर
आरोह : सारेग, मप, ध, निसां
अवरोह : सांनिध, प, मग, रेसा

स्थायी

नि	ध	ऽ	प	म	प	ग	म	प	ऽ	ऽ	ऽ	प	म	ग	रे
०				३				×				२			
सा	रे	ग	रे	ग	म	प	ध	प	म	ग	रे	ग	रे	सा	ऽ
०				३				×				२			
नि़	रे	ग	म	प	ध	नि	सां	रें	सां	नि	सां	प	म	ग	म।
०				३				×				२			

अंतरा

ग ग प ध	प सां ऽ सां	नि रें गं रें	सां नि ध प
०	३	×	२
गं रें सां नि	ध प नि ध	प म॑ ग रे	ग रे सा ऽ
०	३	×	२
नि़ रे ग म॑	प ध नि सां	रें सां नि ध	प म॑ ग म॑
०	३	×	२

राग यमन–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

(सां)नि ध – प	म॑ प ग म॑	प – – –	(म॑)प म॑ ग रे
स दा ऽ शि	व भ ज म	ना ऽ ऽ ऽ	नि स दि न
०	३	×	२
सा रे ग रे	ग म॑ प ध	(म॑)प म॑ ग रे	ग रे सा सा
रि धि सि धि	दा ऽ य क	बि न त स	हा ऽ य क
०	३	×	२
(सा)नि़ रे ग म॑	प ध नि सां	(सां)रें सां नि ध	प म॑ ग म॑
ना ऽ ह क	भ ट क त	फि र त अ	न व र त
०	३	×	२

अंतरा

ग		नि	
प ग प धप	सां – सां –	सां रें गं रें	सां नि ध प
शं ऽ क र	भो ऽ ला ऽ	पा ऽ र व	ती र म ण
०	३	×	२
सां			
गं रें सां नि	ध प नि ध	प मं ग रे	ग रे सा सा
सि त त न	पं ऽ न ग	भू ऽ ष न	अ नु प म
०	३	×	२
नि़		सां	
सा रे ग मं	प ध नि सां	रें सां नि ध	प मं ग मं
का ऽ हे न	सु मि र त	भ ट क त	तू फि र त।
०	३	×	२

राग यमन—त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

मं	मं प	ग	
प प नि ध	प ध प –	मं रे मं मं	प – – –
गु रु बि न	कै ऽ से ऽ	गु न गा ऽ	वे ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
मं प मं			नि़
प नि ध प	– मं ग रे	ग रे गमंप रे	सा रे सा –
गु रु न मा	ऽ ने तो ऽ	गु न नऽऽ हिं	आ ऽ वे ऽ
०	३	×	२
नि़	मं ग		नि
सा सा रे रे	ग मं मं –	प प – नि	मं ध प –
गु नि य न	में ऽ बे ऽ	गु नी ऽ क	हा ऽ वे ऽ
०	३	×	२

अंतरा

मं		प ध	
प – प मे	ग – रे –	ग प सां ध	सां सां सां –
मा ऽ ने ऽ	तो ऽ री ऽ	झा ऽ वे ऽ	स ब को ऽ
०	३	×	२
नि	नि सां		ध ध
सां सां गं रें	सां रें सां –	नि ध सां सां	नि नि मे प
च र न ग	हे ऽ सा ऽ	दी ऽ क न	कें ऽ ज ब
०	३	×	२
मं ग	रे		
प ग प (प)	ग रे सा सा	सारे गमं पध निसां	निध पमं गरे सासा
आ ऽ वे ऽ	अ च प ल	ताऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽल सुर
०	३	×	२

ठाठ बिलावल

स्वर

सा रे ग म प ध नि सां

राग बिलावल–एकताल (१२ मात्राएँ)

वादी स्वर : ध, संवादी : ग
स्वर : सब शुद्ध
गायन-समय : प्रातःकाल का प्रथम प्रहर
आरोह : सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।
अवरोह : सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा।

स्थायी

सां	नि	ध	नि	सां	ऽ	सां	रें	सां	नि	ध	प
×		०		२		०		३		४	
म	ग	म	रे	ग	म	प	ग	म	रे	सा	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि़	सा	ग	रे	सा	नि़	ध़	ध़	सा	ऽ	रे	सा
×		०		२		०		३		४	
ग	म	ग	रे	ग	म	प	ग	म	रे	सा	ऽ ।
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

प	प	ध	नि	सां	ऽ	सां	रें	गं	रें	सां	ऽ
×		०		२		०		३		४	
सां	रें	गं	मं	पं	गं	मं	रें	सां	ऽ	रें	सां
×		०		२		०		३		४	
सां	रें	सां	नि	ध	प	ध	नि	सां	नि	ध	प
×		०		२		०		३		४	
म	ग	म	रे	ग	म	प	ग	म	रे	सा	ऽ ।
×		०		२		०		३		४	

राग बिलावल–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

(प)ग प नि (ध)नि	सां – सां सां	(नि)सां रें सां नि	ध प मग मरे
तू ऽ हि आ	धा ऽ र स	क ल त्रि भु	व न कोऽ ऽऽ
३	×	२	०
(म)ग म प मग	म रे सा –	(नि)ध नि सां नि	ध प मग मरे
पा ऽ ल कऽ	स च रा ऽ	च र भू ऽ	त न कोऽ ऽऽ
३	×	२	०

अंतरा

प – (प)नि (ध)नि	सां – सां –	(नि)सां गं (रें)गं मं	गं रें सां सां
तू ऽ ही ऽ	वि ऽ ष्णू ऽ	तू ऽ ना ऽ	रा ऽ य न
३	×	२	०
(नि)सां – गं रें	स – (नि)ध प	(नि)ध नि सां सांनि	ध प मग मरे
का ऽ र न	तू ऽ प र	ब्र ऽ ह्म जऽ	ग त कोऽ ऽऽ
३	×	२	०

राग बिलावल–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

(प)ग प (प)नि (ध)नि	सां – सां सां	(नि)सां निसांरें सां नि	ध प मग मरे
तें ऽ ह रि	ना ऽ म न	सु मिऽऽ र न	की ऽ नोऽ ऽऽ ।
३	×	२	०

म ग म प मग	म रे सा –	नि सांसां गंरें सांनि धनि	सांनि धप मग मरे
ए ऽ क ऽहुँ	दी ऽ न ऽ	रेंऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ नऽ।
३	×	२	०

अंतरा

प प प सां सां	सां रें सां सां	नि सां रें गं रें	नि सां सां (सां) ध निप
सु मि र न	भ ज न क	रो ऽ के ऽ	श व को ऽऽ
३	×	२	०
प प ग म प ग	म रे सा सा	नि सांसां गंरें सांनि धनि	सांनि धप मग मरे
अ भ य दा	ऽ न तो है	दीऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ नऽ
३	×	३	०
प नि ग प – धनि			
तें ऽ ऽ हरि			
३			

ठाठ खमाज

स्वर

सा रे ग म प ध नि॒ सां

राग खमाज–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

वादी स्वर : ग, संवादी : नि
स्वर : नि कोमल, आरोह में रे वर्जित
गायन-समय : रात्रि का दूसरा प्रहर
आरोह : सा, गम, प, ध नि सां
अवरोह : सांनि॒ धप, मग, रेसा

ग ग सा ग	म प ग म	नि ध ऽ म	प ध ऽ म
×	२	०	३
ग ऽ ऽ ऽ	ध नि सां ऽ	सां नि ध प	म ग रे सा
×	२	०	३

अंतरा

ग म ध नि	सां ऽ नि सां	सां गं मं गं	नि नि सां ऽ
×	२	०	३
सां रें सां नि	ध नि ध प	ध म प ग	म ग रे सा
×	२	०	३
नि़ सा ग म	प ग ऽ म	नि ध ऽ म	प ध ऽ म
×	२	०	३
ग ऽ ऽ ऽ	ध नि सां ऽ	सां नि ध प	म ग रे सा ।
×	२	०	३

राग खमाज–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

सां
प

सां	ध रे		
नि नि धप म	प म ग ग	म – प म	प – – –
न घ टऽ मु	र लि ऽ या	बा ऽ जे स	खी ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

नि सां			ग
सां नि सां रें	सां नि॒ ध प	म ग म गरे	सा रे नि़ सा
सि मि ट जु	व ति ज न	ठा ऽ ड़े निऽ	चे ऽ त न
०	३	×	२
सा			ध
नि़ सा ग म	प प नि नि	सां नि सां रें	सां नि॒ ध, सां
पु ल कि त	स ब त न	मु कु लि त	न य न, प।
०	३	×	२

अंतरा

म नि॒		सां	सां
ग म ध नि	सां – नि सां	नि – सां सां	नि सां नि॒ ध
रा ऽ ग ख	मा ऽ ज सु	ना ऽ य सु	ल ऽ च्छ न
०	३	×	२
सां नि सां रें	सां नि॒ ध प	सां नि॒ ध प	म ग रे सा
०	३	×	२
सा		नि	
नि़ सा ग म	प प नि नि	सां नि सां रें	सां नि॒ ध, सां
पु ल कि त	स ब त न	मु कु लि त	न य न, प।
०	३	×	२

राग खमाज—त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

प		म	नि
सां (सां) – नि॒नि॒	धप ध (म) ग	ग म प ध	सां नि सां –
ला ऽ ऽ गर	ह्योऽ ऽ म न	रा ऽ धा ऽ	व र से ऽ
०	३	×	२
नि मं	रें रें	सां	ध प
– सां – गंमं	गं – नि सां	– नि सां सां	निसांरें निसां नि॒ ध॒
ऽ औ ऽ रक	हे ऽ क छु	ऽ औ र उ	पऽऽ रऽ से ऽ
०	३	×	२
ध			
सां – – नि॒नि॒			
ला ऽ ऽ गर			
०			

अंतरा १.

म नि॒	सां	नि	रें
ग म ध नि	सां – ध नि	सां – – सां	सांनि सां नि॒ ध
दि न र ति	याँ ऽ अँ खि	याँ ऽ ऽ आ	गेऽ ऽ मे री
०	३	×	२
नि॒	रें रें	सां	नि प
सां – गं मं	गं – नि सां	– नि सां सां	सां (सां) नि॒ ध
ठा ऽ ड़े र	हे ऽ क छु	ऽ रू प सु	घ र से ऽ,
०	३	×	२
ध			
सां – – नि॒नि॒			
ला ऽ ऽ गर			
०			

अंतरा २.

म ऩि ग म ध नि आ ऽ नं द् ०	सां नि सां सां ध न प्र भु ३	सां नि – सां – ला ऽ ए ऽ ×	नि सां (सां) ऩि ध ने ऽ हा ऽ २
ध मं पं – गं गं प्रे ऽ म रँ ०	रें रें गं – नि सां गूँ ऽ गी मैं ३	सां नि नि सां सां गि रि ध र ×	ध प निसांरें निसां ऩि ध वऽऽ रऽ से ऽ २
ध सां – – ऩिऩि ला ऽ ऽ गर ०			

ठाठ भैरव

स्वर

सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां

राग भैरव–झप ताल (१० मात्राएँ)

वादी स्वर : ध, संवादी : रे
विकृत स्वर : रे, ध कोमल
गायन-समय : प्रात:काल
आरोह : सा, रे॒, ग म, पध॒, नि, सां
अवरोह : सां, नि ध॒, पमग रे॒, सा

स्थायी

सा	ध	प	प	ध	म	प	म	ग	रे
×		२			०		३		
ग	रे	ग	म	प	म	ग	रे	रे	सा
×		२			०		३		
नि़	सा	रे	रे	सा	ध़	ध़	नि़	सा	ऽ
×		२			०		३		
ग	रे	ग	म	प	म	ग	रे	रे	सा
×		२			०		३		

अंतरा

ध	प	ध	ध	नि	सां	ऽ	ध	नि	सां
×		२			०		३		
ध	ध	नि	सां	रें	सां	नि	ध	ध	प
×		२			०		३		
म	ग	म	प	ध	रें	सां	ध	ध	प
×		२			०		३		
सां	नि	ध	ध	प	म	ग	रे	रे	सा
×		२			०		३		
सा	ध	प	प	ध	म	प	म	ग	रे ।
×		२			०		३		

राग भैरव–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

			म
			प म
			गु रु

म		सा	म
रे̱ – – सा	– रे̱ नि̱ सा	म – – –	रे̱ रे̱ म म
ना ऽ ऽ था	ऽ स ब न	के ऽ ऽ ऽ	नि त सु म
०	३	×	२
	ध̱		ग रे̱
प – प ध̱	सां – सां सांनि	ध̱ नि ध̱ प	म रे̱, प म
रे ऽ म न	जी ऽ वि तऽ	छि न भं ऽ	गु र, गु रु।
०	३	×	२

अंतरा

ग	नि		सां
म – प –	ध̱ – नि नि	सां सां सां सां	नि सां सां सां
जो ऽ चा ऽ	हे ऽ तु च	तु र सु ख	सं ऽ प द्
०	३	×	२
नि नि			सां नि
ध̱ – ध̱ ध̱	नि – सां सां	रें̱ रें̱ सां सां	नि सां ध̱ प
मं ऽ ग ल	ना ऽ म क	म ल सु ख	सं ऽ व द
०	३	×	२
म	ध̱	नि	रे
ग म प ध̱	सां – सां सांनि	ध̱ नि ध̱ प	म रे̱, प मग
जा ऽ कि कु	पा ऽ स बऽ	पु र त का	ऽ म, गु रुऽ।
०	३	×	२

राग भैरव-त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

म		नि				प									
ग	म	ध	–	प	–	ध	म	धध	पम	प	–	म	–	ग	–
जा	ऽ	गो	ऽ	मो	ऽ	ह	न	प्याऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
प			म	ग				ग				म			
ग	–	म	ग	रे	–	ग	प	म	ग	म	ग	रे	–	सा	–
साँ	ऽ	व	री	सू	ऽ	र	त	मो	रे	म	न	भा	ऽ	वे	ऽ
०				३				×				२			
सा		म						सां	सां						
नि़	सा	ग	म	प	ध	नि	सां	रें	रें	सां	नि	ध	प	म	ग
सु	ऽ	द	र	ला	ऽ	ल	ह	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ
०				३				×				२			

अंतरा

				नि											
प	–	प	प	ध	–	नि	नि	सां	–	सां	–	नि	सां	सां	सां
प्रा	ऽ	त	स	मैं	ऽ	उ	ठि	भा	ऽ	नू	ऽ	द	य	भ	यो
०				३				×				२			
नि			सां					सां				सां		नि	
ध	–	ध	नि	सां	सां	सां	सां	रें	–	सां	सां	नि	सां	ध	प
ग्या	ऽ	ल	बा	ऽ	ल	स	ब	भू	ऽ	प	त	ठा	ऽ	ड़े	ऽ
०				३				×				२			
प				ध		नि						म			
ग	म	प	ध	सां	–	ध	प	म	ग	(म)	ग	रे	–	सा	–
द	र	स	न	कें	ऽ	स	ब	भू	ऽ	खे	ऽ	प्या	ऽ	से	ऽ
०				३				×				२			

सा म		सां सां	
नि़ सा ग म	प ध नि सां	रें रें सां नि	ध प म ग
उ ठि यो ऽ	नं ऽ द कि	शो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ रे ऽ ।
०	३	×	२

ठाठ पूर्वी

स्वर

सा रे ग म प ध नि सां

राग यमन–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

> वादी स्वर : ग, संवादी : नि
> विकृत स्वर : रे ध कोमल, मध्यम दोनों प्रकार के
> गायन-समय : दिन का अंतिम प्रहर
> आरोह : सा, रे, ग, मप, ध, निसां
> अवरोह : सां, नि ध, प, म ग, रे, सा

स्थायी

सा ध म प	ग म ग रे	म ग ऽ रे	ग म प ऽ
०	३	×	२
प ध म प	ग म ग ऽ	रे ग ऽ म	ग रे सा ऽ
०	३	×	२
नि़ नि़ सा रे	ग ऽ म ग	म ध रें नि	ध नि ध प
०	३	×	२
प ध म प	ग म ग रे	म ग ऽ रे	ग म प ऽ ।
०	३	×	२

अंतरा

म॑ ग म॑ ध॒	म॑ सां ऽ सां	नि रें॒ गं रें॒	सां नि ध॒ प
०	३	×	२
रें॒ नि ध॒ नि	ध॒ प ध॒ प	म॑ ग ऽ म॑	ग रे॒ सा ऽ
०	३	×	२
नि़ नि़ सा रे॒	ग ऽ म ग	म॑ ध॒ रें॒ नि	ध॒ नि ध॒ प
०	३	×	२
प ध॒ म॑ प	ग म ग रे॒	म ग ऽ रे॒	ग म॑ प ऽ।
०	३	×	२

राग पूर्वी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

सा म॑	म॑	म॑	
नि़ रे॒ ग प	– प – प	प ध॒ म॑ पम॑	ग म ग –
ए ऽ री ऽ	ऽ म ऽ का	स ब सु खऽ	दी ऽ नो ऽ
०	३	×	२
ध॒	ध॒		
म॑ रे॒ ग म॑	– ध॒ म॑ ग	म॑ ग म॑ ग	रे॒ रे॒ सा –
दू ऽ ध पू	ऽ त औ र	अ न ध न	ल छ मी ऽ
०	३	×	२
सा	म॑	म॑ ध॒	म॑
नि़ नि़ सा रे॒	ग – प –	प ध॒ म॑ पम॑	ग म ग –
पि या पा ऽ	थो ऽ गो ऽ	बिं द रं गऽ	मी ऽ नो ऽ।
०	३	×	२

ग	ध॒		नि
म॑ म॑ ग ग	म॑ – ध॒ म॑ध॒	सां सां सां –	सां रें॒ सां सां
अ ध म उ	धा ऽ र नऽ	ज स बी ऽ	स्ता ऽ र न
०	३	×	२
नि		सां सां	
सां सां – सां	नि ध॒ नि ध॒	नि निरें॒ नि ध॒	नि ध॒ प प
कृ पा ऽ क	र न दु ख	ह रऽ न सु	ख क र न
०	३	×	२
सा	ग		म॑
नि़ रे॒ ग रे॒ग	प – प प	म॑प ध॒ म॑ पम॑	ग म ग –
आ ऽ जि जऽ	के ऽ स ब	लाऽ ऽ य कऽ	की ऽ नो ऽ।
०	३	×	२

राग पूर्वी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

ध॒	म॑		
प – ध॒ म॑	– पम॑ ग म	ग – – म॑	ग रे॒ सा –
ना ऽ थ ना	ऽ थऽ क र	बो ऽ ऽ ल	र स ना ऽ
०	३	×	२
ध॒ ध॒	म॑		
म॑ ध॒ नि म॑	ध॒ म॑ ग म	ग – – म॑	ग रे॒ सा –
ना ऽ थ ना	ऽ थ क र	बो ऽ ऽ ल	र स ना ऽ
०	३	×	२
सां सां	ध॒		
नि – ध॒ नि	रें॒ नि म॑ म॑	ग – – म॑	ग रे॒ सा –
ना ऽ थ ना	ऽ थ क र	बो ऽ ऽ ल	र स ना ऽ
०	३	×	२
नि़ ध॒	म॑		
सा ध॒ ध॒ म॑	– पम॑ ग म	ग – – म॑	ग रे॒ सा –
ना ऽ थ ना	ऽ ऽथ क र	बो ऽ ऽ ल	र स ना ऽ।
०	३	×	२

अंतरा

धु	धु	धु	नि
म - ग ग	म म धु मधु	सां - सां सां	सां रें सां -
का ऽ हे तु	म न ब कऽ	वा ऽ द क	र त है ऽ
०	३	×	२
सां रें	धु		
नि रें गं नि	रें नि म म	ग - - म	ग रे सा -
कृ ऽ ष्ण कृ	ऽ ष्ण क हि	डो ऽ ऽ ल	र स ना ऽ
०	३	×	२
धु सां	धु		
म - धु नि	रें नि म म	ग - - म	ग रे सा -
ना ऽ थ ना	ऽ थ क र	बो ऽ ऽ ल	र स ना ऽ।
०	३	×	२

ठाठ मारवा

स्वर

सा रे ग म प ध नि सां

राग मारवा–एकताल (१२ मात्राएँ)

वादी स्वर : रे, संवादी : ध ।
विकृत स्वर : रे कोमल, म तीव्र । प वर्जित
गायन-समय : दिन का अंतिम प्रहर
आरोह : सा, रे, ग, मध, निध, सां
अवरोह : सां, निध, मग, रे सा

स्थायी

ध	म॑	ध	म॑	ग	रे॒	ग	म॑	ग	रे॒	सा	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि़	रे॒	नि़	ध़	म़॑	ध़	सा	ऽ	रे॒	रे॒	सा	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि़	रे॒	ग	ग	म॑	ध	म॑	ध	सां	ऽ	रें॒	सां
×		०		२		०		३		४	
नि	रें॒	नि	ध	म॑	ध	नि	ध	म॑	ग	रे॒	सा।
×		०		२		०		३		४	

अंतरा

ग	ग	म॑	ध	म॑	ध	सां	ऽ	नि	रें	सां	ऽ
×		०		२		०		३		४	
नि	नि	रें॒	रें॒	नि	रें॒	नि	ध	म॑	ध	म॑	ग
×		०		२		०		३		४	
रे॒	रे॒	ग	ग	म॑	म॑	नि	ध	म॑	ग	रे॒	सा
×		०		२		०		३		४	
नि	रें॒	नि	ध	म॑	ध	म॑	ग	म॑	ग	रे॒	सा।
×		०		२		०		३		४	

राग मारवा—त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

(सा) ध ध मं ध	मं ग रे॒ रे॒	(सा) रे॒ गरे॒ ग मं	ग रे॒ सा सा
त त बि त	त घ न सु	षि ऽऽ स ब	मा ऽ न त
०	३	×	२
(ध) मं — ध़ सा	सा सा रे॒ सा	सारे॒ ग (रे॒) ग मं	ग रे॒ सा सा
बा ऽ जे च	तु र वि ध	शाऽ ऽ स्त्र ब	खा ऽ न त ।
०	३	×	२

अंतरा

ग — मं ध	(ध) मं सां सां सां	— रें॒ नि रें॒	नि रें॒ नि ध
बी ऽ न मृ	दं ऽ ग झाँ	ऽ झ सु र	ली ऽ ग त
०	३	×	२
(ध) मं ध नि ध	(ध) मं ध मं ग	रे॒ गरे॒ (रे॒) मं ग	ग रे॒ सा सा
भे ऽ द अ	नं ऽ त च	तु ऽऽ गु नि	जा ऽ न त ।
०	३	×	२

राग मारवा—त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

(मं) ध मं — ग	— रे॒ — सा	(सा) नि़ रे॒ ग —	(ध) मं मं ध —
ल ई ऽ रे	ऽ श्या ऽ म	ह म री ऽ	डु रि या ऽ
०	३	×	२

ध		सा	ध
म॑ ध म॑ ग	– रे॒ – सा	नि़ रे॒ ग –	म॑ म॑ ध –
ल ऽ ई रे	ऽ श्या ऽ म	ह म री ऽ	डु रि या ऽ
०	३	×	२
सां			
नि रें नि म॑	– ध म॑ –	ग रे॒ ग म॑	ग रे॒ सा –
कै ऽ से मैं	ऽ भ रूँ ऽ	ज ल की ग	ग रि या ऽ।
०	३	×	२

अंतरा

ध		ध	
ग – ग म॑	– म॑ ध –	म॑ – सां सां	सां – सां सां
बा ऽ ट घा	ऽ ट में ऽ	रो ऽ क त	टो ऽ क त
०	३	×	२
सां	ध		
नि निरें नि ध	म॑ ध म॑ ग	म॑ रे॒ ग म॑	ग॒ रे॒ सा –
अ बऽ न र	हों ऽ ते रि	म थु रा न	ग रि या ऽ।
०	३	×	२

ठाठ काफी

स्वर

सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां

राग काफी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

वादी स्वर : प, संवादी : सा
विकृत स्वर : ग नि कोमल
गायन-समय : मध्य रात्रि
आरोह : सारेग॒, म, प, धनि॒सां
अवरोह : सां नि॒ ध, प, मग॒, रे, सा

सा	सा	रे	रे	ग	ग	म	म	प	ऽ	ऽ	म	प	ध	नि	सां
०				३				×				२			
नि	ध	प	म	ग	ग	रे	रे	रे	प	म	प	म	ग	रे	सा।
०				३				×				२			

अंतरा

म	म	प	ध	नि	नि	सां	ऽ	रें	गं	रें	सां	नि	ध	नि	ऽ
०				३				×				२			
ध	ध	प	प	प	ध	प	म	प	ऽ	ऽ	म	प	ध	नि	सां
०				३				×				२			
नि	ध	प	म	ग	ग	रे	रे	रे	प	म	प	म	ग	रे	सा
०				३				×				२			

राग काफी—त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

सा नि
प्र भु

सा	रे	रे	(म)ग	-	म	-	म	प	-	-	म	प	ध	नि	सां
ते	री	द	या	ऽ	है	ऽ	अ	पा	ऽ	ऽ	तुं	अ	ग	म	अ
०				३				×				२			
नि	ध	प	म	(म)ग	ग	रे	रे	रे	नि	ध	नि	प	ध	म	प
गो	ऽ	च	र	अ	वि	क	ल	च	र	अ	च	र	स	क	ल
०				३				×				२			
म	ग	म	प	म	-	सा	नि	सा	ग	रे	म	(म)ग	-	रे	नि
ऽ	क	तु	ऽ	धा	ओ	पं	ति	त	न	को	उ	द्धा	ऽ	प्र	भु।
०				३				×				२			

अंतरा

									मं						
प	–	प	ध	म	प	नि	सां	रें	ग॒ं	रें	सां	रें	नि	सां	सां
दी	ऽ	न	अ	ना	ऽ	थ	प	ती	ऽ	त	रु	दु	र	ब	ल
०				३				×				२			
				म											
नि॒	नि॒	ध	प	ग॒	–	रे	–	रे	नि॒	ध	नि॒	प	ध	म	प
म	ह	द	प	रा	ऽ	धी	ऽ	श	र	णा	ऽ	ग	त	हूँ	ऽ
०				३				×				२			
												म			
म	ग	म	प	म	–	सा	नि़॒	सा	ग॒	रे	म	ग॒	–	रे	नि़॒
च	तु	र	ति	हा	ऽ	मों	हे	पा	ऽ	र	उ	ता	ऽ	प्र,	भु ।
०				३				×				२			

राग काफ़ी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

		सां					म								
प	ध	नि॒	–	ध	ध	धप	ग॒	–	ग॒	रेग॒	रेसा	प	–	प	–
म	न	रे	ऽ	सु	न	पुऽ	रा	ऽ	न	क्या	ऽऽ	की	ऽ	ता	ऽ
२				०				३				×			
							म								
नि	सां	निसांरें	नि॒	ध	ध	धप	ग॒	–	ग॒	रेग॒	सारे	–	प	–	प
म	न	रेऽऽ	ऽ	सु	न	पुऽ	रा	ऽ	न	क्या	ऽऽ	ऽ	की	ऽ	ता
२				०				३				×			

अंतरा

प				सां					मं						
म	–	प	ध	नि	नि	सां	–	सांरें	ग॒ं	रें	सां	रें	नि	सां	–
मो	ऽ	ह	ल	ग	न	की	ऽ	गेंऽ	ऽ	ल	न	छाँ	ऽ	ड्यो	ऽ
०				३				×				२			

सां			रें
नि – सां नि	सां सां नि सां	निसां रेंनि॒ ध प	ध सां नि॒ –
का ऽ म अ	म ल म द	पीऽ ऽऽ ता ऽ	म न रे ऽ ।
०	३	×	२

अंतरा २.

म म प ध	नि – सां –	निसां रेंगं॒ रें सां	रें नि सां सां
सु त ब नि	ता ऽ वं ऽ	धूऽ ऽऽ के ऽ	का ऽ र न
०	३	×	२
सां	सां		सां सां
नि नि सां सां	नि नि सां सां	निसां रेंनि॒ ध प	प ध पध नि॒
प चि प चि	ज न म बि	तीऽ ऽऽ ता ऽ	म न रेऽ ऽ ।
०	३	×	२

ठाठ आसावरी

स्वर

सा रे ग॒ म प ध॒ नि॒ सां

राग आसावरी—त्रिताल (१६ मात्राएँ)

वादी स्वर : ध, संवादी : ग
स्वर : ग, ध, नि कोमल तथा आरोह में ग, नि वर्जित
गायन-समय : दिन का दूसरा प्रहर
आरोह : सा, रे, म प, ध॒ सां
अवरोह : सां, नि॒, ध॒, प, मग॒, रे, सा

स्थायी

रे म प नि	ध ध प प	म प ध प	ग ग रे सा
३	×	२	०
रे सा ध़ प़	म़ प़ ध़ सा	रे म प ध	ग ग रे सा
३	×	२	०

अंतरा

म प ध ध	सां ऽ रें सां	ध ध सां गं	रें सां ध प
३	×	२	०
प गं रें सां	रें सां ध प	म प ध प	ग ग रे सा
३	×	२	०

राग आसावरी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

प प
मो रे

नि		म	सा
ध – प प	ध म प –	मध मप ग –	रे – सा –
का ऽ न भ	न क वा ऽ	पऽ रिऽ लो ऽ	री ऽ मा ऽ
×	२	०	३
	म म	म	
म प पध पप	ग – ग –	ग ग रे सा	रे – सा सा
ज ब आऽ ऽऽ	वें ऽ गे ऽ	ह म रे ऽ	ला ऽ ल न
×	२	०	३
नि नि		म	सा
सा – ध ध	प – ध म	पध मप ग –	रे म, प प
आ ऽ प हि	मो ऽ रे मं	दऽ रऽ वा ऽ	ऽ ऽ, मो रे।
×	२	०	३

अंतरा

	नि॒ नि॒	ध॒	
म म प –	ध॒ – ध॒ –	सां – सां सां	सां सां सां –
ज ब आ ऽ	वें ऽ गे ऽ	या ऽ द र	व ज वा ऽ
२	०	३	×
नि॒ नि॒	ध॒		नि॒
ध॒ ध॒ ध॒ ध॒	सां सां सां –	सांरें ग॒ं रें सां	रें सां ध॒ प
त न म न	ध न नौ ऽ	छाऽ ऽ व र	क रि हूँ ऽ
२	०	३	×
म प			
प ग॒ं – रेंसां	रें – सां –	– म प ध॒	सां – – –
स दा ऽ रेंऽ	गी ऽ ले ऽ	ऽ मं म द	शा ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×
प	म	सा	
ध॒ प ध॒ म	पध॒ मप ग॒ –	रे म, प प	
र त न भ	नऽ कऽ वा ऽ	ऽ ऽ, मो रे	
२	०	३	

राग आसावरी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

प	म	म	नि॒
ध॒ म पध॒ मप	ग॒ – रे सा	रे म प सां	ध॒ – प –
ह रि बिऽ नऽ	ते ऽ रा ऽ	कौ ऽ न स	हा ऽ ई ऽ
२	०	३	×
प	नि॒		म
ध॒ म प प	ध॒ – प –	ध॒ म पध॒ मप	ग॒ – रे सा
ह रि बि न	का ऽ कें ऽ	मा ऽ ऽत पिऽ	ता ऽ सु त
२	०	३	×

कण		नि सां	सां	सां सां नि
स्वर	रे रे सा –	सां – गं –	रें – सां –	रें रें धु प
बोल	व नि ता ऽ	को ऽ का ऽ	हू ऽ को ऽ	भा ऽ ई ऽ ।
ताल	२	०	३	×

अंतरा

कण		नि नि	धु	
स्वर	म म प प	धु – धु धु	सां – सां सां	सां सां सां –
बोल	ध न ध र	नी ऽ अ रु	सं ऽ प ति	न ग री ऽ
ताल	०	३	×	२
कण	नि नि	धु	सां	
स्वर	धु – धु –	सां – सां सां	सांरें गं रें सां	रें नि धु प
बोल	ओ ऽ मा ऽ	न्यो ऽ अ प	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ई ऽ
ताल	०	३	×	२
कण			म	
स्वर	प धु नि –	धु प पधु मप	ग – रे सा	रे – सा –
बोल	त न छू ऽ	टे ऽ कऽ छुऽ	सं ऽ ग न	चा ऽ ले ऽ
ताल	०	३	×	२
कण	नि सा	सां	सां सां नि	प
स्वर	सा सा गं –	रें – सां सां	रें रें धु प	धु म पधु मप
बोल	क हा ता ऽ	ही ऽ ल प	टा ऽ ई ऽ	ह रि बिऽ नऽ ।
ताल	०	३	×	२

ठाठ भैरवी

स्वर

सा रे॒ ग॒ म प ध॒ नि॒ सां

राग भैरवी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

वादी स्वर : म, संवादी : सा ।
विकृत स्वर : रे, ग, ध, नि कोमल,
गायन-समय : प्रातःकाल
आरोह : सा, रे॒, ग॒ म, प, ध॒, नि॒ सां
अवरोह : सां, नि॒, ध॒, प, मग॒, रे॒, सा

स्थायी

सा	ध॒	प	ध॒	म	प	ग॒	म	नि॒	ध॒	ऽ	सा	ऽ	रे॒	ग॒	म
०				३				×				२			
ग॒	रे॒	सा	ऽ	ध॒	नि॒	सा	रे॒	नि॒	सा	म	म	ग॒	ग॒	रे॒	सा
०				३				×				२			

अंतरा

नि॒	सा	ग॒	म	ध॒	म	ध॒	नि॒	सां	ऽ	सां	ऽ	गं॒	गं॒	रें॒	सां
०				३				×				२			
नि॒	सां	गं॒	मं	पं	गं॒	ऽ	मं	गं॒	रें॒	सां	ऽ	गं॒	गं॒	रें॒	सां
०				३				×				२			
सां	सां	नि॒	नि॒	ध॒	ध॒	प	प	म	म	ग॒	ग॒	रे॒	रे॒	सा	ऽ ।
०				३				×				२			

राग भैरवी—दादरा (६ मात्राएँ)

स्थायी

											म
											गो
^ग^रे	ग	रे	सा	रे	नि	सा	सा	—	—	—	सा
विं	ऽ	द	को	ऽ	भ	ज	न	ऽ	ऽ	ऽ	क
×			०			×			०		
रे	म	—	—	प	ध	^म^प	—	—	^म^ग	—,	म
र	ले	ऽ	ऽ	म	न	रं	ऽ	ऽ	ग	ऽ,	गो
×			०			×			०		

अंतरा

^प^ध	—	म	ध	—	नि	सां	—	—	सां	—	—
अं	ऽ	ऽ	त	ऽ	र्	या	ऽ	ऽ	मी	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
^सां^नि	नि	—	सां	—	—	^गं^रें	—	सां	^नि^ध	—	प
न	र	ऽ	ना	ऽ	ऽ	रा	ऽ	य	णा	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
सा	—	ध	प	प	—	प	प	—	प	ध	नि
पू	ऽ	ऽ	र	त	ऽ	स	ब	ऽ	के	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
^नि^ध	—	पम	^म^ग	—,	म						
का	ऽ	ऽऽ	म	ऽ,	गो						
×			०								

राग भैरवी—त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

नि॒	ग॒		
सा – सारे॒, पम	रे॒ – सारे॒ ,नि॒	सा – – सा	पप धु॒प मग॒ रे॒सा
सो ऽ ऽऽ, चम	ना ऽ ऽऽ ,तू	की ऽ ऽ न	घट मेंऽ ऽऽ ऽऽ
०	३	×	२
	ग॒		
सा – सारे॒ पम	रे॒ – सारे॒ ,नि॒	सा – – सा	पप पध॒नि॒सां नि॒ध॒पम ग॒रे॒सा-
सो ऽ ऽऽ, चम	ना ऽ ऽऽ ,तू	की ऽ ऽ न	घट मेंऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ।
०	३	×	२

अंतरा

		म	
सा सा सा–रे॒	ग॒ – म –	ग॒ ग॒ म –	रे॒ग॒मप ध॒नि॒ध॒प मग॒रे॒सा रे॒नि॒सा-
क हाँ से ऽतू	आ ऽ यो ऽ	क हाँ जा ऽ	वेऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽगोऽ
०	३	×	२
नि॒ सा	प	नि॒ म म	
सा – ध॒ –	प प ध॒ पध॒सां	ध॒ प ग॒ –	पप ध॒प मग॒ रे॒सा
भे ऽ जा ऽ	तु झ को ऽऽऽ	की ऽ न ऽ	घट मेंऽ ऽऽ ऽऽ।
०	३	×	२

अंतरा २.

प ध़ म ध़ नि़	सां - सां -	सां नि़ - सां -	नि़ नि़ सांरें़गं़गं़ -सांरें़रें़ सां ध़प
क्या ऽ तू ऽ	ला ऽ यो ऽ	क्या ऽ ले ऽ	जाऽऽऽ ऽऽऽऽ वे गोऽ
०	३	×	२
नि़ सा ध़ – पप	प प प ध़ पध़सां	नि़ ध़ प (ग़) –	पध़ प प नि़नि़ध़प मग़रे़सा
मा ऽ ऽ लिक	स ब का ऽऽऽ	कौ ऽ न ऽ	घ ट मेंऽऽऽ ऽऽऽऽ ।
०	३	×	२

ठाठ तोड़ी

स्वर

सा रे़ ग़ मं प ध़ नि सां

राग तोड़ी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

वादी स्वर : ध, संवादी : ग
स्वर : रे, ग, ध कोमल; म तीव्र
गायन-समय : दिन का दूसरा प्रहर
आरोह : सा, रे़, ग़, मंप, ध़ निसां
अवरोह : सांनिध़प, मंग़, रे़, सा

स्थायी

ध ध प प	म म प ध	म ग ऽ रे	ग म प ऽ
०	३	×	२
ग म प ध	नि ध प म	ग म प म	ध ध रे सा
०	३	×	२
नि़ सा ग ग	म ग म ध	नि ध रें नि	ध नि ध प ।
०	३	×	२

अंतरा

म ग म ध	नि नि सां -	ध नि सां गं	रें स न ध
०	३	×	२
गं गं रें सां	रें नि ध ध	म ध नि ध	म ग रे सा
०	३	×	२
नि़ सा ग ग	म ग म ध	नि ध रें नि	ध नि ध प।
०	३	×	२

राग तोड़ी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

(सा)नि	सा	ग	म	प	म	प	ध	(ध)म	–	ग	रे	ग	रे	सा	सा
ने	ऽ	क	चा	ऽ	ल	च	लि	ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	च	तु	र
०				३				×				२			
म	म	प	ध	(ध)म	म	ग	–	रे	रे	ग	रे	ग	रे	सा	–
प्र	भु	सों	ऽ	ड	रि	ए	ऽ	ग	र	ब	न	क	रि	ए	ऽ
०				३				×				२			
नि	सा	ग	ग	(ध)म	–	ध	नि	(ध)म	–	ग	रे	ग	रे	सा	–
ना	ऽ	हिं	भ	रो	ऽ	सो	ऽ	या	ऽ	न	र	त	न	को	ऽ
०				३				×				२			

अंतरा

म	म	ग	ग	म	म	ध	ध	नि	–	सां	नि	सां	सां	सां	सां
ह	र	रं	ग	क	हे	उ	प	दे	ऽ	स	ब	च	न	अ	ब
०				३				×				२			
नि	नि	सां	गं	रें	रें	सां	सां	नि	नि	सां	रें	नि	नि	ध	–
स	म	झ	स	म	झ	प	ग	ज	ग	में	ऽ	ध	रि	ए	ऽ
०				३				×				२			

								प							
मे	धु	नि	सां	नि	धुनि	धु	प	ग	–	रे	ग	–	रे	सा	सा
म	नु	ष	ज	न	मऽ	न	हिं	बा	ऽ	र	बा	ऽ	र	य	हाँ
०				३				×				२			
सा				धु				धु							
नि़	रे	ग	–	मे	–	धु	नि	मे	मे	ग	रे	ग	रे	सा	सा
कं	र	ना	ऽ	हो	ऽ	सो	ऽ	क	रि	ए	ऽ	ऽ	च	तु	र
०				३				×				२			

राग तोड़ी–त्रिताल (१६ मात्राएँ)

स्थायी

प								ग							
मे	मे	प	धु	मे	ग	रे	–	रे	रे	सा	नि़	सा	रे	ग	–
क	हाँ	न	र	अ	प	नो	ऽ	ज	न	म	ग	मा	ऽ	वे	ऽ
२				०				३				×			
ग				ग				सा				रे			
रे	–	रे	–	रे	रे	सा	सा	नि़	–	सा	रे	नि़	–	धु़	–
आ	ऽ	या	ऽ	म	द	वि	ष	या	ऽ	र	स	रा	ऽ	च्यो	ऽ
२				०				३				×			
				प				धु	धु						
सा	रे	ग	ग	मे	मे	धु	धु	नि	नि	धु	मे	ग	–	रे	सा
रा	ऽ	म	श	र	ण	न	हिं	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ ।
२				०				३				×			

अंतरा

(प)म म ग –	(प)म – ध ध	(सां)नि नि सां –	(सां)नि सां सां –
य ह सं ऽ	सा ऽ र स	क ल है ऽ	सु प नो ऽ
२	०	३	×
(सां)नि – सां गं	रें – सां –	(सां)नि – सां रें	(रें)नि – ध –
दे ऽ ख क	हा ऽ लो ऽ	भा ऽ ऽ ऽ	वे ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×
(ध)म ध नि सां	निध नि ध प	(म)ग ग रे रे	(ग)रे – सा –
जो ऽ उ प	जेऽ ऽ सो ऽ	स क ल वि	ना ऽ शे ऽ
२	०	३	×
सा रे ग ग	(ध)म ध नि सां	(सां)रें (सां)रें नि ध	म ग रे सा
र ह न न	को ऽ ऊ ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ वे ऽ।
२	०	३	×

ठाठ तथा ठाठ रागों के स्वरों का तुलनात्मक चार्ट

ठाठ	राग
ठाठ बिलावल	**राग बिलावल**
सा रे ग म प ध नि सां	सा रे ग म प ध नि सां
ठाठ कल्याण	**राग यमन**
सा रे ग म प ध नि सां	सा रे ग म॑ प ध नि सां
ठाठ खमाज	**राग खमाज**
सा रे ग म प ध नि॒ सां	सा रे ग म प ध नि॒ सां
ठाठ भैरव	**राग भैरव**
सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां	सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां
ठाठ पूर्वी	**राग पूर्वी**
सा रे॒ ग म॑ प ध॒ नि सां	सा रे॒ ग म॑ प ध॒ नि सां
ठाठ मारवा	**राग मारवा**
सा रे॒ ग म॑ प ध नि सां	सा रे॒ ग म प ध नि सां
ठाठ काफी	**राग काफी**
सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां	सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां
ठाठ आसावरी	**राग आसावरी**
सा रे ग॒ म प ध॒ नि॒ सां	सा रे ग॒ म प ध॒ नि॒ सां
ठाठ भैरवी	**राग भैरवी**
सा रे॒ ग॒ म प ध॒ नि॒ सां	सा रे॒ ग॒ म प ध॒ नि॒ सां
ठाठ तोड़ी	**राग तोड़ी**
सा रे॒ ग॒ म॑ प ध॒ नि सां	सा रे॒ ग॒ म॑ प ध॒ नि सां

आचार्य भातखंडे-लिखित

हि० सं० प० क्रमिक पुस्तक-मालिका

दूसरा भाग (हिंदी)

इसमें यमन, यमनकल्याण, बिलावल, अल्हैया-बिलावल, खमाज, भैरव, पूर्वी, मारवा, काफी, आसावरी, भैरवी तथा तोड़ी—इन १२ रागों की थ्योरी और आलाप-सहित ३२९ चीजों की स्वरलिपियाँ दी गई हैं। सजिल्द मूल्य १८)

तीसरा भाग (हिंदी)

इसमें भूपाली, हमीर, केदार, बिहाग, देस, तिलककामोद, कालिंगड़ा, श्री, सोहनी, बागेश्री, वृंदावनीसारंग, भीमपलासी, पीलू जौनपुरी और मालकौंस—इन १५ रागों की थ्योरी व आलाप-सहित ५१२ चीजों की स्वरलिपियाँ दी गई हैं। सजिल्द मूल्य २५)

चौथा भाग (हिंदी)

इसमें १२ रागों की ५३२ चीजों की स्वरलिपियों के अतिरिक्त शास्त्रीय विवरण और आलाप भी दिए गए हैं। सजिल्द मूल्य २५)

पाँचवाँ भाग (हिंदी)

इसमें ७० रागों की २५१ चीजों की स्वरलिपियाँ रागों के शास्त्रोक्त विवरण-सहित दी गई हैं। सजिल्द मूल्य २५)

छठवाँ भाग (हिंदी)

इसमें ६८ रागों की २३७ चीजों की स्वरलिपियाँ शास्त्रोक्त विवरण-सहित दी गई हैं। सजिल्द मूल्य २०)

स्वरमालिका

इसमें आ० भातखंडे ने ६२ रागों में बड़ी कलापूर्ण बंदिशों को सरल सरगमें दी हैं, जो संगीत के प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी तथा ज्ञानवर्धक हैं। पृष्ठ-संख्या १३०, मूल्य ४)

भातखंडेजी ने 'क्रमिक पुस्तक-मालिका' के प्रथम भाग को छोड़कर उपर्युक्त प्रत्येक पुस्तक के प्रारंभ में आवश्यक थ्योरी पर विवेचना की है।

सभी पुस्तकों पर डाक-व्यय पृथक् लगेगा।

पता : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

संगीत-अर्चना (तान-आलाप)

[लेखक : बी० एन० भट्ट]

क्रमिक पुस्तक, भाग ३ की गायकी : इसमें थर्डईयर या इंटर-मीडिएट परीक्षा में आनेवाले १५ रागों—भूपाली, हमीर, केदार, बिहाग, देस, तिलककामोद, कालिंगड़ा, श्री, सोहनी, बागेश्री, वृंदावनीसारंग, भीमपलासी, पीलू, जौनपुरी और मालकोश—का विवरण, आलाप, बोलतानें, दुगुन, चौगुन, आड़ की दुगुन, आड़ की चौगुन इत्यादि पूरी-पूरी गायकी ताल-स्वर-सहित दी गई है।

आकार २०"×२६" अठपेजी, पृष्ठ-संख्या २७४, सजिल्द मूल्य १०), डाक-व्यय पृथक्।

संगीत-कादंबिनी (तान-आलाप)

[लेखक : बी० एन० भट्ट]

क्रमिक पुस्तक, भाग ४ की गायकी : यह संगीत-विशारद के विद्यार्थियों के लिए अत्यंत लाभदायक पुस्तक है। इसमें शुद्धकल्याण, कामोद, छायानट, गौड़सारंग, हिंडोल, शंकरा, देशकार, जैजैवंती, रामकली, पूरियाधनाश्री, वसंत, परज, पूरिया, ललित, गौड़मल्लार, मियाँमल्लार, दरबारीकान्हड़ा, अड़ाना और मुलतानी—इन रागों की पूर्ण व्याख्या अत्यंत विस्तृत रूप से दी गई है तथा इन रागों के आलाप, तान, ध्रुवपद, धमार, आड़ की दुगुन, आड़ की चौगुन भी दी गई हैं।

आकार २०"×२६" अठपेजी, पृष्ठ-संख्या २७०, सजिल्द मूल्य ११), डाक-व्यय पृथक्।

प्रकाशक : संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

संगीत-संबंधी प्रकाशन



कंठ-संगीत

बाल-संगीत-शिक्षा ३ भागों में	७-५०
संगीत-किशोर	३-००
गांधर्व संगीत-प्रवेशिका	५-००
क्रमिक पुस्तक-मालिका, भाग १ से ६ तक पूरा सैट	११५-००
स्वर-मालिका	४-००
संगीत-अर्चना	१०-००
संगीत-कादंबिनी	११-००
मारिफुन्नगमात, भाग १-२-३	३८-००
अप्रकाशित राग, ३ भागों में	१६-००
मधुर चीज़ें	५-००
लक्षण-गीत अंक	८-००
राग-रागिनी अंक	१०-००
खयाल अंक	१०-००
आलाप-तान अंक	१०-००
'कल्याण ठाठ अंक' से 'भैरवी ठाठ अंक' तक दस ठाठों के अंकों का पूरा सैट	८०-००
ध्रुपद-धमार अंक	८-००
तराना अंक	८-००
ठुमरी-गायकी	७-००
संगीत-सागर	१२-००
कर्नाटक-संगीत अंक	६-००
भक्ति-संगीत अंक	८-००
मीरा संगीत अंक	१०-००
संगीत-अनुलाप	१०-००
वंदना संगीत	४-००
सूर-संगीत, भाग १-२	९-५०
रवींद्र-संगीत	७-००
काव्य-संगीत अंक	८-००
ग़ज़ल अंक	८-००
राष्ट्रीय संगीत	८-००
लोक-संगीत अंक	१०-००
फिल्मी शास्त्रीय गीत अंक	१०-००
फिल्मी ग़ज़ल अंक	६-००
फिल्मी प्रेमगीत अंक	१०-००
फिल्मी उल्लास-गीत अंक	६-००
फिल्मी विरह-गीत अंक	६-००
फिल्मी युगल-गान अंक	६-००
फिल्मी प्रणय-गीत अंक	६-००
फिल्मी भजन अंक	६-००
फिल्मी सांस्कृतिक गीत अंक	६-००
फिल्मी विविध गीत अंक १, २, ३ प्रत्येक	६-००
फिल्म-संगीत, १९७७	१०-००



शास्त्र व इतिहास

संगीत रत्नाकर भाग-१	२०-००
संगीत-शास्त्र	३-००
हाईस्कूल संगीत-शास्त्र	५-५०
संगीत-विशारद	१२-००
राग-कोष	४-००
भातखंडे-संगीत-पाठमाला	३-००
भातखंडे-संगीतशास्त्र, भाग एक से चार तक पूरा सैट	८४-२५
संगीत-पद्धतियों का अध्ययन	७-००
उ.भा.संगीत का सं.इतिहास	५-००
भारतीय संगीत का इतिहास	९-००
'संगीत' रजत-जयंती अंक	८-००
अलाउद्दीन खाँ स्मृति अंक	३-००
संगीत-चिंतामणि	३०-००
संगीत-निबंधावली	७-००
निबंध संगीत	२५-००
संगीत-पारिजात	१२-००
संगीत-दर्पण	६-००
स्वरमेल-कलानिधि	४-००
दत्तिलम्	४-००
बृहद्देशी	१०-००
संगीत-मकरंदः	७-००
पाश्चात्य संगीत-शिक्षा	१२-००
आवाज सुरीली कैसे करें ?	६-००



वाद्य-संगीत

वाद्य-वादन अंक	१२-००
ताल अंक	८-००



ताल-प्रकाश	१५-00
ताल-मार्तंड	१0-00
तबले पर दिल्ली और पूरब	६-00
कायदा और पेशकार	४-५0
मृदंग-तबला-प्रभाकर, दो भागों में	१0-00
मृदंग अंक	१0-00
सितार-शिक्षा	८-00
सितार-मालिका	१४-00
बेला-विज्ञान	१५-00
बैंजो-मास्टर	३-५0
गिटार-मास्टर	३-५0
म्यूजिक-मास्टर (हिंदी में)	५-00
म्यूजिक-मास्टर (उर्दू में)	५-00
रविशंकर के आरकेस्ट्रा	१२-00

नृत्य

नृत्य-भारती	८-00
नृत्य अंक	८-00
कथक नृत्य	२०-00
कथकलि नृत्य-कला	८-00
भारत के लोक-नृत्य(सचित्र)	१0-0
नृत्य-नाटिका अंक	१0-00
म्यूजिक-मिरर (इंग०)५ अंक	१२-५0
तुकांत-कोश (३२८५२ तुकें)	१0-00
काका हाथरसी अभिनन्दन ग्रंथ	७0-00

'संगीत' शास्त्रीय संगीत का प्रतिनिधि मासिक पत्र है। इसके अध्ययन से आप घर बैठे संगीत की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इसके प्रत्येक अंक में संगीत के सभी अंगों की शास्त्रीय तथा फिल्म-संगीत से संबद्ध रचनाएँ होती हैं। वार्षिक मूल्य २२) है, साधारण एक प्रति का मूल्य २) है। इस मासिक पत्र की सन् १९६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ७१, ७२, ७३ की फाइलें (वर्ष के उपलब्ध सभी अंकों-सहित, जिनमें एक-एक विशेषांक भी होता है) बिक्री के लिए मौजूद हैं। मूल्य प्रति फाइल १५), सन् १९७४ की फाइल का मूल्य १८) तथा सन् ७५, ७६ व ७७ की फाइलों का मूल्य प्रति फाइल २२) है। डाक-व्यय अतिरिक्त है।

विस्तृत विवरण के लिए सूचीपत्र मँगाइए।

प्रकाशक : संगीत कार्यालय, हाथरस २०४ १०१